B.A. I
Paper-II
Lec-1.
Dr. Ashish Kumar Pandey.

Topic- "Pragmatism" (उपयोगितावाद) (1)

यह सिद्धान्त भी सत्यता-संबंधी सिद्धान्तों में से एक है। इस सिद्धान्त में व्यावहारिकता के संप्रत्यय पर महत्व दिया गया है जो अन्य सिद्धान्तों से अलग है। साथ ही यह विचार भारतीय दर्शन के चिन्तन में मुख्यतः विकसित रूप में देखा जाता है, जहाँ सत्य का आधार प्रतिज्ञप्ति या तथ्य के बीच संवादिता नहीं, न तो प्रतिज्ञप्ति का ज्ञान-समर्थित की सामंजस्य में है। सत्य का निर्णायक व्यवहार है। किसी भी विचार, प्रतिज्ञप्ति परिणामों से जुड़ी होती है अतः सत्यता कथन या विश्वास की सत्यता उनके परिणामों से, व्यवहार एवं परिणामों में गहरा संबंध है। भिन्न विचारकों ने भिन्न ढंग से इस संबंध को उभारा है।

उपयोगितावाद के मुख्य लक्षण —

1. प्रत्येक ज्ञान सिद्धान्त के समरूप सत्य का सिद्धान्त होता है, अतः उपयोगितावाद में भी ज्ञान की सत्यता भी काफी तदनुरूप होती है। यहाँ सत्य की समस्या के लिए एक मानदण्ड दिया जाता है, जो कि एक बाह्य उपाधि है एवं उसके पूरा होने पर सत्य प्राप्त होता है।
2. कुछ विचारक इसे व्यावहारिकता कहना ज्यादा उपयुक्त समझते हैं क्योंकि सत्यता के विवेचन में व्यावहारिकता पर ज्यादा महत्व दिया गया है। इसकी वजह यह है कि उपयोगिता शब्द में कुछ रागात्मक, संवेगात्मक एवं मूल्यात्मक पक्ष भी है, जो व्यावहारिकता में उस मात्रा में नहीं है। ये विचारक परिणाम, व्यवहार आदि तत्वों पर ही सत्यता के निर्धारण में बल देते हैं, जो कि व्यावहारिकता शब्द से ज्यादा प्रकाशित होता है। साथ ही इस पक्ष पर महत्व देने से समकालीन दर्शन में यह प्रमुख संप्रदाय व्यावहारिकतावाद कहलाया।
3. उपयोगितावाद सिद्धान्त के अनुसार सत्य का मानदण्ड एक व्यावहारिक एवं आनुभविक मानदण्ड है। विचार या ज्ञान या कथन या प्रतिज्ञप्ति या विश्वास स्वभावतः व्यवहारोन्मुख होता है, यानी आगे ले जाने वाला या कर्मपरक है, जो किसी न किसी प्रकार हमारे व्यावहारिक जीवन को प्रभावित करते हैं। अतः सत्यता की कसौटी व्यवहार है।
4. ये उपयोगितावादी इन संप्रत्ययों या विचारों या प्रतिज्ञप्तियों या ज्ञान के अर्थ के सिद्धान्त देते हैं जिससे सत्य का सिद्धान्त बनता है। किसी भी विचार के स्वीकृत या अस्वीकृत से संभव जितने चिन्तनीय परिणाम या व्यावहारिक प्रभाव होंगे वे सभी उस विचार या संप्रत्यय का अर्थ निर्धारित करेंगे। इन संप्रत्ययों की सत्यता भी इन्हीं संभव परिणामों पर निर्भर है। अतः अर्थ, सत्यता, व्यवहार एवं परिणाम में गहरा संबंध है।
5. इस सिद्धान्त के अनुसार सत्य कोई स्थिर चीज नहीं जो पहले से ही विद्यमान विचार या ज्ञान में अवस्थित रहे या निर्धारित रूप से मौजूद रहे और हम उसको प्राप्त में पता करते हैं। यह किसी विचार का अन्तर्निहित गुण भी सिद्ध है

दूंदने ही उत्पन्न है। सत्य तो एक घटना है, प्रक्रिया है जिसे अनुभव के क्रम में निर्मित करना होता है। इसे हम प्राप्त करते हैं उसी प्रकार जैसे स्वास्थ्य, धन-संपत्ति आदि। हम कुछ क्रिया को ये प्राप्त करते हैं या निर्मित करते होता है। अतः किसी भी विचार का सत्य के प्रति कोई दावा नहीं होता है। विचार में अन्तर्निहित सत्य उपर्युक्त अंशों के रूप में निर्णयों या विश्वास या विचार में उद्देश्य नहीं रहता। इसे घटनाओं के द्वारा सत्य बनाया जाता है। ज्ञाता के उद्देश्य की सफलता ही इसे सत्यता देती है।

6. उपयोगितावाद के अनुसार सत्यता व्यक्ति के प्रयोजन के अनुरूप निर्मित होती है। अतः यहाँ बुद्धि का भी एकमात्र योगदान नहीं बल्कि सत्य के निर्धारण में भावात्मक पक्ष का भी सक्रिय महत्व है। कोई विचार तभी सत्य होगा जब सत्य में परिणत करने के लिए संतोषप्रद भाव उत्पन्न होगा जुड़ जाते हैं।

7. अतः सत्य अनिवार्य नहीं होता। सत्य का निर्धारण व्यक्ति से होता है, मगर व्यक्ति का आधार भी भिन्न विचारों के अनुसार भिन्न-भिन्न है, मगर उद्देश्य की सफलता या इन सत्यों के मूल में संतोषजनक परिणाम एवं उद्देश्य की सफलता व्यवहार की सफलता के कारण उपस्थित रहते हैं।

— x —